* श्री श्रीकृष्णचैतन्यचन्द्रो विजयतेतमाम् *

SHRI KESHABJI GOUDIYA MATH
Mathura (U.P)

* साधक सर्वस्व *

पदावली, एवं संकीर्त्तन विधि संग्रह

Shri Keshabji Goudiya Math
Kans Tilla, Agra Road
Mathura-281001 U.P

प्रकाशक :—

श्री वैष्णव दासानुदासाभास

श्री रसिकमुरारीदास

गौराङ्ग जयन्ती
श्रीगौर पूर्णिमा)
३० गोविन्द,
मार्च १९६०

श्रीचैतन्याब्द ४७४

मुद्रत जैनप्रेस, कोटा.

नामापराध

१–नामानुरागी सन्तों की निन्दा करना।

२–श्रीहरि के रूप, गुण, लीला को उनके नाम से भिन्न समझना ।

३–गुरुदेव की अवज्ञा करना।

४–श्रुति वेद, शास्त्र की निन्दा करना।

५–श्रीहरिनाम के माहात्म्य को अति स्तुति (केवल प्रशंसा) मात्र मानना।

६–श्रीहरि नाम को कल्पना किया हुआ मानना।

७–नाम की ओट में पाप कर्म करते रहना।

८–धर्म, व्रत, त्याग, होम आदि कर्मों के साथ सर्वोपरि श्रीहरि नाम को बराबर समझना।

९–श्रद्धा-हीन श्रीहरि से विमुख जन को नाम का उपदेश देना।

१०–श्रीनाम के परम पवित्र माहात्म्य को सुनकर भी 'मैं', 'मेरा' करते हुये विषयों में पड़कर नाम में प्रीति न करना।

संकीर्त्तन में जानने योग्य बातें

यद्यपि श्रीनाम–कीर्त्तन सब समय किया जा सकता है। किन्तु सामुहिक कीर्त्तन करने पर कुछ बातों का ध्यान अवश्य रखना चाहिये।

कीर्त्तन में विराजे हुये प्रधान पुरुष की आज्ञा का पालन करना चाहिये और उनको प्रणाम करके बैठना चाहिये।

कीर्त्तन मंडप में कोई वस्तु खाना, पीना नहीं चाहिये।

कीर्त्तन के स्थान में बातें व हल्ला नहीं करना चाहिये।

पान, बीड़ी आदि का सेवन करते हुये नहीं बैठना चाहिये।

भगवान् श्रीहरि की मूर्ति को प्रणाम करके बैठना चाहिये।

कीर्त्तन में सिनेमा की तर्जों का अभ्यास नहीं होना चाहिये।

कीर्त्तन मंडप में सबके साथ मिलकर हरिनाम कीर्त्तन करना चाहिये।

श्रीमहामंत्र 'हरे कृष्ण हरे कृष्ण .... हरे राम हरे राम ....' इस विधि से कीर्त्तन करना चाहिये।

विशेष महोत्सवों में एक दिन पूर्व अधिवास कीर्त्तन करना चाहिये। मंगल घट स्थापन, बन्दनवार, केले के खम्भ का रोपण, श्रीमूर्त्ति (चित्रपट आदि) की स्थापना करना, पूजा, भोग, आरति सब किया जा सकता है। वैसे कीर्त्तनों में भी कर सकते हैं, सुसज्जित भगवान् का सिंहासन, पवित्र जल, पुष्प माला, तुलसी दल, चन्दन, धूप, दीप, नैवेद्य आदि होना चाहिये। शंख, घन्टा, मृदंग, करताल आदि वाद्य भी होने चाहिये। यदि कोई यह न कर सके तो कोई बात नहीं है। भक्तों को बुलाकर भगवान् श्रीहरि व सन्तों की वन्दना करके मिलकर श्रीहरिनाम का संकीर्त्तन करना चाहिये।

कई लोग अखण्ड कीर्त्तन करते हैं, साल में अथवा ६ महीने में एक बार घर में कीर्त्तन करवाते हैं। जो भी हो कभी भी कीर्त्तन करना अच्छा है किन्तु साल में ६ महीने में एक ही बार कीर्त्तन

कर लेने के बाद वे फिर कभी कीर्त्तन का नाम भी नहीं लेते, यदि ऐसे लोग साल ६ महीने में एक बार भोजन करलें और रोज रोज न करें तो कितनी ज्यादा बचत हो जायेगी ? ऐसे लोग यह नहीं जानते कि कीर्त्तन आत्मा का भोजन है जिसमें कोई लागत, खर्चा नहीं है। शरीर व उसका भोजन थोड़े समय का है। अन्त में प्रभु से ही काम पड़ता है।

वैसे तो चलते, फिरते सब समय, भगवद् नाम कीर्त्तन करते रहना चाहिये, किन्तु संकीर्त्तन से साधकों को विशेष उत्साह और भजन में रुचि बढ़ती है, जहाँ तक हो सके नित्यप्रति मिल कर हरिनाम संकीर्त्तन करना चाहिये।

मेरा स्वरूप एवं धर्म

नाहं विप्रो न च नरपतिर्नापि वैश्यो न शूद्रो
नाहं वर्णी न च गृहपतिर्नो वनस्थो यतिर्वा।
किन्तु प्रोद्यन्निखिलपरमानन्दपूर्णामृताब्धे-
र्गोपीभर्त्तुः पदकमलयोर्दास-दासानुदासः॥

(श्रीमन् महाप्रभु की श्रीमुख कमल वाणी, पद्यावली ६३ श्लोक)

१, मैं ब्राह्मण नहीं, क्षत्रिय राजा भी नहीं, वैश्य या शूद्र नहीं, ब्रह्मचारी, गृहस्थ, बानप्रस्थ या सन्यासी भी नहीं हूँ। परन्तु मैं नित्य स्वतः प्रकाशमान निखिल परमानन्द पूर्ण अमृत स्वरूप श्रीगोपीजनवल्लभ श्रीकृष्ण के पद कमलों के दासों का दास हूँ।

२. मैं श्रीहरि की जीवशक्ति का अंश हूँ। मैं अणु चेतन हूं। मैं सर्वशक्तिमान श्रीहरि की शक्ति का अंश होने से उनके नित्य आधीन हूँ।

३. मैं नित्य श्रीहरि का दास हूँ। प्रभु की सेवा करना मेरा स्वरूप धर्म है।

४. सब जीव आत्मायें मेरे प्रभु के दास हैं। इसलिये सबका यथोचित सम्मान करना मेरा कर्त्तव्य है।

५. सभी जड़, चेतन, प्रभु का वैभव है। उन पर प्रभुत्व करने का मुझे कोई अधिकार नहीं हैं। इसलिये किसी को भी

दुःखाना व घृणा करना अपराध है।

६. यदि कोई जीव मेरे प्रति हिंसा करे तो मैं उसके प्रति अपना प्रेम भाव ही रखूँगा। यही मेरे नित्यानन्द प्रभु की शिक्षा है

७. भगवान् व उनके भक्तों की निन्दा मैं कभी नहीं सुनूँगा

८. किसी भी देवता व धर्मशास्त्र का अपमान नहीं करूँगा

९. श्रीहरि की भक्ति सेवा छोड़ कर स्वर्ग सुखादि की प्राप्ति के लिये जो कर्म करते हैं उनसे मैं उदासीन रहूँगा।

१०. जो केवल आत्मज्ञान को श्रेष्ठ जानकर मोक्ष के लिये ही यत्न करते हैं, उनसे भी मैं दूर रहूँगा।

११. जो लोग भगवान् श्रीहरि की श्रीमूर्त्ति, स्वरूप, नाम, गुण, लीला, धाम व भगवद् पार्षदों की नित्यता को स्वीकार नहीं करते हैं वे लोग मायावादी होते हैं। मैं उनका संग कभी नहीं करूँगा।

१२. जो लोग सर्वशक्तिमान परब्रह्म की सर्वज्ञता व सर्व-समर्थता तथा भगवद् अवतार को नहीं मानते हैं उन शक्ति हीन ब्रह्म मानने वाले निर्विशेषवादीगण का संग मैं कभी नहीं करूँगा।

१३. श्रीहरि भक्ति को छोड़कर भगवद् प्राप्ति के अन्य भी साधन हैं ऐसा जो मानते हैं मैं उनसे अलग रहूँगा।

१४. भगवद भजन को छोड़कर केवल विषय भोग में लगे हुये घरबारी विषयी लोगों के साथ रहने वाले व्यक्ति के साथ मैं नहीं रहूँगा।

१५. जिस प्रकार राज्य विरोधी चोर आदि दुष्टजन की सेवा सहायता करने वाले भी अपराधी होते हैं, उसी प्रकार भगवद् विरोधी विमुख जन की सेवा करना भी अपराध है। मैं श्रीहरि विमुख जन की सेवा नहीं करूँगा।

१६. भगवान् श्रीहरि व उनके भक्तों की सेवा करना मेरा परम धर्म है। मैं निरन्तर श्रीहरि, श्रीहरिभक्त जन की मन कर्म एवं वाणी द्वारा सेवा करूँगा।

सेवा-अपराध

भगवान् श्रीहरि की सेवा पूजा में निम्न लिखित अपराधों से सावधान रहना चाहिये:—
१-सवारी या पादुका लेकर भगवद् मन्दिर में जाना, २-भगवद् जन्म दिनादि में उत्सव न करना, ३-श्रीमूर्त्ति के सामने प्रणाम न करना, ४-अशुचि अवस्था में प्रणाम करना, ५-एक हाथ से प्रणाम करना, ६-श्रीमूर्त्ति के सामने टहलना, ७-श्रीमूर्त्ति के सामने पैर फैलाना, ८-घुटने पकड़ कर बैठना, ९-श्रीमूर्त्ति के सामने भोजन करना, १०-सोना, ११-झूंठ बोलना, १२-ऊँचे स्वर से बोलना, १३-आपस में निकम्मी बातें करना, १४-रोना, १५-झगड़ना, १६-किसी पर नाराज होना, १७-किसी पर खुश होना, १८-किसी को कड़वे वचन बोलना, १९-लोम कम्बल पहर कर सेवा करना, २०-किसी की निन्दा करना, २१-किसी की स्तुति करना, २२-अश्लील वाक्य कहना, २३-गन्दी वायु छोड़ना, २४-भगवान् की सेवा में कंजूसी करना, २५-भगवान् का प्रसाद छोड़कर किसी दूसरे का प्रसाद व वस्तु खाना, २६-ऋतु (मौसम) के फल, साग, अन्न आदि पहले ठाकुर जी को अर्पण न करना, २७-इकट्ठी की हुई वस्तुओं के शिरोभाग पहले सेवा में न देकर के किसी दूसरे को देना, २८-श्रीमूर्त्ति को पीठ दिखाना, २९-श्रीमूर्त्ति के सामने गुरु जी के अतिरिक्त अन्य किसी को सिर झुकाना, ३०-गुरुदेव को स्तव न करके मौन भाव होकर बैठना, ३१-गुरु के सामने अपनी प्रशंसा करना, ३२ देवताओं की निन्दा करना, ३३-अभक्त व किसी पशु यथा कुत्ता आदि की दृष्टि में पड़ा हुआ भोजन भोग देना, ३४-बासी, सूखे, मैले, फूल, मंत्र बिना शुद्ध किये हुये अथवा अधिक जल में डुबाकर धोये हुये फूलों से पूजा करना, ३५-बिना धोये तुलसी चढ़ाना, ३६-अंधेरे में व बायें हाथ से श्रीमूर्ति का स्पर्श करना। इत्यादि सेवा-अपराध हैं। सर्वदा इनका त्याग करना चाहिये।

जय ध्वनि

जय श्री श्रीगुरुगौराङ्ग गन्धर्विका गिरधारी जी की जय ।

,, ॐ विष्णुपाद श्रीश्रील.................................महाराज की जय ।

,, ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीलभक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभु-पाद की जय ।

,, ॐ विष्णुपाद परमहंस बाबाजी श्रीश्रील गौर किशोर दास महाराज की जय ।

,, ॐ विष्णुपाद श्रीश्रील सच्चिदानंद भक्तिविनोद ठाकुर की जय ।

,, ॐ विष्णुपाद वैष्णव सार्व्वभौम श्रीश्रीलजगन्नाथ दास बाबा जी महाराज की जय ।

,, गौड़ीय वेदान्ताचार्य श्रीश्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभु की जय ।

,, श्रीश्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर जी की जय ।

,, ,, नरोत्तम, श्रीनिवास, श्रीश्यामानन्द प्रभुत्रय की जय ।

,, ,, कृष्णदास कविराज गोस्वामी प्रभु की जय ।

,, श्रीरूप, सनातन, भट्ट रघुनाथ, श्रीजीव, गोपालभट्ट, रघुनाथ दास छः गोस्वामी प्रभु की जय ।

,, श्री श्रीस्वरूप दामोदर गोस्वामी प्रभु की जय ।

,, ,, श्रीनामाचार्य श्रीहरिदास ठाकुर की जय ।

,, ,, श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु नित्यानन्द, श्रीअद्वैत, गदाधर, श्रीवासादि गौर भक्त वृन्द की जय ।

,, ,, श्री राधामदनमोहन, श्री राधागोविन्द, श्री राधागोपीनाथ जी की जय ।

,, श्री नवद्वीप धाम की जय । श्री श्रीव्रज वृन्दाबन धाम की जय ।

,, श्री वृन्दा जू की जय ।

,, श्री भक्ति देवी की जय ।

,, श्री यमुना जू की जय । श्री गंगा जू की जय ।

,, पतित पावन अनन्त कोटि वैष्णव वृन्द की जय ।

,, श्री हरिनाम प्रभु की जय । श्री हरिनाम संकीर्त्तन की जय ।

,, गौरप्रेमानन्दे हरि हरि बोल ।

मंगलाचरण

वन्देऽहं श्रीगुरोः श्रीयुतपदकमलं श्रीगुरुन् वैष्णवांश्च ।
श्रीरूपं साग्रजातं सहगणरघुनाथान्वितं तं सजीवम् ॥
साद्वैतं सावधूतं परिजनसहितं कृष्णचैतन्यदेवं ।
श्रीराधाकृष्णपादान् सहगणललिता–श्रीविशाखान्वितांश्च ॥

श्रीगुरु प्रणाम

अज्ञान–तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

श्रीश्रीलप्रभुपाद की वन्दना

नमः ॐ विष्णुपादाय कृष्णप्रेष्ठाय भूतले ।
श्रीमते भक्तिसिद्धान्त—सरस्वतीतिनामिने ॥
श्रीवार्षभानवीदेवीदयिताय कृपाब्धये ।
कृष्णसम्बन्धविज्ञानदायिने प्रभवे नमः ॥
माधुर्य्योज्ज्वलप्रेमाढ्य—श्रीरूपानुगभक्तिद ।
श्रीगौरकरुणाशक्तिविग्रहाय नमोऽस्तुते ॥
नमस्ते गौरवाणी श्रीमूर्त्तये दीनतारिणे ।
रूपानुगविरुद्धापसिद्धान्तध्वान्तहारिणे ॥

श्रीलगौरकिशोर वन्दना

नमो गौरकिशोराय साक्षाद्वैराग्यमूर्त्तये ।
विप्रलम्भरसाम्बोधे पादाम्बुजाय ते नमः ॥

श्रीलभक्तिविनोद वन्दना

नमो भक्तिविनोदाय सच्चिदानन्द—नामिने ।
गौरशक्तिस्वरूपाय रूपानुगवराय ते ॥

श्रीलजगन्नाथ वन्दना

गौराविर्भावभूमेस्त्वं निर्देष्टा सज्जनप्रियः ।
वैष्णवसार्व्वभौम श्रीजगन्नाथाय ते नमः ॥

श्रीवैष्णव प्रणाम

वाञ्छाकल्पतरुभ्यश्च कृपासिन्धुभ्य एव च ।
पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमो नमः ॥

श्रीगौराङ्ग प्रणाम

नमो महावदान्याय कृष्णप्रेमप्रदाय ते ।
कृष्णाय कृष्णचैतन्यनाम्ने गौरत्विषे नमः ॥

पञ्चतत्त्व प्रणाम

पञ्चतत्त्वात्मकं कृष्णं भक्तरूपस्वरूपकम् ।
भक्तावतारं भक्ताख्यं नमामि भक्तशक्तिकम् ॥

श्रीकृष्ण प्रणाम

हे कृष्ण करुणासिन्धो दीनबन्धो जगत्पते ।
गोपेश गोपिकाकान्त राधाकान्त नमोऽस्तु ते ॥

श्रीराधा प्रणाम

तप्तकाञ्चनगौराङ्गि राधे वृन्दावनेश्वरि ।
वृषभानुसुते देवि प्रणमामि हरिप्रिये ।

श्री श्रीराधामदनमोहन जी का प्रणाम

जयतां सुरतौ पङ्गोर्मम मन्दमतेर्गती ।
मत्सर्व्वस्वपदाम्भोजौ राधामदनमोहनौ ॥

श्री श्रीराधागोविन्द जी का प्रणाम

दिव्यद्वृन्दारण्यकल्पद्रुमाधः श्रीमद्रत्नागारसिंहासनस्थौ ।
श्रीश्रीराधा-श्रीलगोविन्ददेवौ प्रेष्ठालीभिः सेव्यमानौ स्मरामि ॥

श्री श्रीराधागोपीनाथ जी का प्रणाम

श्रीमान् रासरसारम्भी वंशीवटतटस्थितः ।
कर्षन् वेणुस्वनैर्गोपीर्गोपीनाथः श्रियेऽस्तु नः ॥

श्रीतुलसी प्रणाम

वृन्दायै तुलसीदेव्यै प्रियायै केशवस्य च ।
कृष्णभक्तिप्रदे देवि सत्यवत्यै नमो नमः ॥

संकीर्त्तन के पहले जय-ध्वनि फिर बन्दना और उसके बाद गुर्व्वष्टक, पञ्चतत्त्व कीर्त्तन करके श्रीनाम महामंत्र कीर्त्तन करना चाहिये।

गुर्व्वष्टक

संसार-दावानल-लीढ़-लोक-त्राणाय कारुण्यघनाघनत्वम्।
प्राप्तस्य कल्याण-गुणार्णवस्य वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्॥१॥
महाप्रभोः कीर्त्तन-नृत्य-गीत-वादित्रमाद्यन्मनसो रसेन।
रोमाञ्च-कम्पाश्रु-तरङ्ग-भाजो, वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्॥२॥
श्रीविग्रहाराधन-नित्य-नाना-शृङ्गार-तन्मन्दिर-मार्ज्जनादौ।
युक्तस्य-भक्तांश्च नियुञ्जतोऽपि, वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्॥३॥
चतुर्व्विध-श्रीभगवत्प्रसाद स्वाद्वन्नतृप्तान् हरिभक्तसङ्घान्।
कृत्वैव तृप्तिं भजतः सदैव वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्॥४॥
श्रीराधिकामाधवयोरपार-माधुर्य्य-लीला-गुण-रुप-नाम्नाम्।
प्रतिक्षणास्वादन-लोलुपस्य, वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्॥५॥
निकुञ्जयुनोरतिकेलिसिद्ध्यै या यालिभिर्युक्तिरपेक्षणीया।
तत्रातिदाक्षादतिवल्लभस्य वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्॥६॥
साक्षाद्धरित्वेन समस्तशास्त्रै-रुक्तस्तथा भाव्यत एव सद्भिः।
किन्तु प्रभोर्यः प्रिय एव तस्य वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्॥७॥
यस्य प्रसादाद्भगवत्प्रसादो यस्याप्रसादान्नगतिः कुतोऽपि।
ध्यायंस्तुवंस्तस्य यशस्त्रिसन्ध्यं वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्॥८॥

(श्रील विश्वनाथ चक्रवर्त्ति ठाकुर कृत)

पञ्चतत्त्व—

श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु नित्यानन्द।
श्रीअद्वैत, श्रीगदाधर, श्रीवासादि गौर भक्त वृन्द॥

महामन्त्र—

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥

'श्री गुरु वन्दना'

श्री गुरु चरण पद्म, केवल भगति सद्म,
वन्दौ मैं सावधान मन से ।
जाके प्रसाद भाई, संसार पार जाई,
कृष्ण प्राप्ति होय जिन चरण से ॥
गुरु मुख पद्म वाणी, हृदय में एक मानी,
और न करो हे मन ! आशा ।
श्री गुरु चरण रति, यही है उत्तम गति,
जिनकी कृपा पूरै अभिलाषा ॥
नित्य चक्षु दियो जोई, जन्म जन्म प्रभु सोई,
दिव्य ज्ञान कियो प्रकाश ।
प्रेम भक्ति होकृपा से, अविद्या विनास जा से,
वेद गावैं जिनका विलास ॥
श्री गुरु करुणा सिन्धु, अधम जनों के बन्धु,
लोकनाथ सर्व्व लोक जीवन ।
हा हा प्रभु करो दया, मोय दीजे पद छाया,
यश गाय सब त्रिभुवन ॥

वैष्णव सेवा-लालसा

कौन विधि पाऊँ सेवा मैं दुराचारी ।
श्रीगुरु वैष्णव रति भई न हमारी ॥
अशेष माया में मन मग्न ह्वै गयो ।
वैष्णवन में लेश मात्र प्रीति नाहिं भयो ॥
विषय में भूलि अन्ध भयो दिवानिशि ।
गले-फांसी देत फिरत माया जो पिशाची ॥
छुटै नहिं माया अरु जीति नहिं जाय ।
साधु गुरु कृपा बिना नाहिं कोउ उपाय ॥
अदोष-दरशी प्रभु पतित उद्धार ।
अब के तो 'नरोत्तम' करहु निस्तार ॥

श्री वैष्णव–महिमा

ठाकुर वैष्णव पद, अवनी में सम्पद, सुनो भाई होये एक मन ।
जो आश्रय लेके भजें, तिन्हहिं कृष्ण नाहिं तजें, और सब मरें अकारण
वैष्णव चरण जल, देये प्रेम भक्ति बल, और कछु नहीं बलवन्त ।
वैष्णव चरण रेणु, मस्तक भूषण बिनु, नहीं होवे भूषण को अन्त
तीर्थजल पवित्र गुण, पुराण में भरे सुन, सो सब भक्ति प्रवञ्चन ।
वैष्णव के पादोदक, सम नहीं तीर्थोदक, जासों होये वाञ्छित पूरण
वैष्णव के संग मन, आनन्दित अनुक्षण, सदा मिले श्रीकृष्ण प्रसंग
रोये 'नरोत्तमदास', हृदय धीरज नाश, मेरी दशा काहे भई भंग ॥

वैष्णव–विज्ञप्ति

ठाकुर वैष्णव गण ! करूँ यह निवेदन, हौं बड़ो अधम दुराचार ।
विकट संसार निधि, तामें जो डुबायो विधि, केश पकड़ि मोहे करो पार ॥
विधि ऐसो बलवान, नहीं सुने धरम ज्ञान, सदाही करम फांस डारे
न देखूँ उपाय लेश, जहां देखूँ सब क्लेश, अनाथ कातर ह्वै पुकारे
काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, अभिमान सह, खींचें निज आर नहीं माने ।
ऐसो है ये मेरो मन, जैसे फिरे अन्ध जन, सुपथ कुपथ नहीं जाने
लियो नहीं सत मत, असद् में रह्यो चित्त, नहीं भयो तव पद आशा
कहे 'नरोत्तमदास', देख सुन पायो त्रास, तारो मोहे राखो निज पास

वैष्णव निष्ठा

निरखि हरि दासनि नयन सिरात ।
श्याम हृदै में जब ही आवत मिलत गात सों गात ॥
श्रवण होत सुख भवन दवन दुख सुनत छबीली बात ।
दूरि होत त्रैताप पाप सब मुख चरणोदक जात ॥
बाढ़ति अति रस रीति प्रीति सों सन्त प्रसादै खात ।
गद्‌गद स्वर पुलकित जस गावत नैननि नीर चुचात ॥
तिनके मुख मसि घसि लपटाऊँ जिनहिं न सन्त सुहात ।
'व्यास' अनन्य भक्ति बिनु जुग-जुग बहुत गये पछितात ॥

श्री रूपविमल यश

जय जय 'रूप' महारस सागर ।
दरशन परसन बचन रसायन आनन्द हू के गागर ॥
अति गम्भीर धीर करुणामय प्रेम भक्ति के आगर ।
उज्ज्वल प्रेम महामणि प्रकटित देश गौड़ वैरागर ॥
सद्गुण मण्डित पण्डित रञ्जन वृन्दाबन निज नागर ।
कीरति बिमल यश सुनतहिं 'माधव' सतत रहल हिय जागर ॥

श्रीरूपगोस्वामी (श्रीरूपमञ्जरी) चरण शरण लालसा

श्रीरूपमञ्जरी-पद, सोइ मोर सम्पद, सोइ मोर भजन पूजन ।
सोइ मोर प्राणधन, सोइ मोर आभरण, सोइ मोर जीवन को जीवन
सोइ मोर रसनिधि, सोई मोर वाञ्छासिद्धि, सोइ मोर वेद को धरम
सोइ व्रत, सोइ तप, सोइ मोर मन्त्र जप, सोई मोर धरम करम
जो अनुकूल विधि, सो पद में होय सिद्धि, निरखिहों ए दुइ नयना
सो रूपमाधुरीराशि, प्राण-कुवलय-शशी, प्रफुल्लित होऊँ दिन रैना
तब अदर्शन अहि, गरल जरत देहि, चिरदिन तापित जीवन
हा हा प्रभु! करो दया, देह मोहि पद छाया, नरोत्तमहिं राखो शरण

श्रीनित्यानन्द-निष्ठा

निताइ-पद-कमल, कोटि चन्द्र सुशीतल, जासु छाया जगत् जुड़ाय
ऐसो निताइ बिना भाई, राधाकृष्ण नाहिं पाई, दृढ़ गहो नित्यानंद पांय
सो संबंध नाहिं जाको, गयो जन्म वृथा ताको, सोइ नर पशु दुराचार
निताइ नाम नहिंमुखमें, डूबियो संसार सुखमें, विद्याकुल का करे उद्धार
मत्त अभिमान मद, तजियो निताइ पद, असतहिं सत कियो--वरण
निताइ करुणा जबहीं, मिलत राधाकृष्ण तबहीं, धरो दोऊ निताई के चरण
निताइ चरण सत्य, निताइ सेवक नित्य, निताइ पद सदा करो आश
'नरोत्तम' बहु दुःखी, नित्यानंद करो सुखी, राखो निज चरणन पास

प्रार्थना–लालसामयी

गौराङ्ग बोलत जो होय पुलक शरीर ।
हरि हरि बोलत जो नयन बहे नीर ॥
नित्यानन्द चाँद कब करुणा करेंगे ।
संसार वासना सकल हरेंगे ॥
विषय त्यजि मम शुद्ध होगो मन ।
नयन भरि देखिहौं श्रीवृन्दावन ॥
रूप, रघुनाथ पद करि हौं आकुति ।
कब हम बूझि हौं युगल पिरीति ॥
रूप, रघुनाथ पद कमल रहे आश ।
प्रार्थना करत सदा 'नरोत्तम दास' ॥

—:०:—

प्रार्थना

श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु दया करो मोय ।
तुम सों दयालु प्रभु जगत न होय ॥
पतित पावन हेतु लियो अवतार ।
नहिं कोउ मो सों पतित जगत मंझार ॥
हा हा प्रभु नित्यानन्द प्रेमानन्द सुखी ।
कौर कृपा की कीजे हूं मैं अति दुःखी ॥
दया करो सीता पति अद्वैत गुसाईं ।
तब कृपा होये मिलें गौर निताइ ॥
हा हा प्रभु ! गदाधर प्रेम के सिन्धु ।
श्रीवास, हरिदास दीन जन बन्धु ॥
हा स्वरूप, सनातन, रूप रघुनाथ ।
भट्ट युग श्रीजीव हा प्रभु लोकनाथ ॥
दया करो श्रीआचार्य प्रभु श्रीनिवास ।
रामचन्द्र संग माँगे 'नरोत्तम दास' ॥

दैन्य और प्रपत्ति

हरि हे दयाल मोर जय राधा-नाथ ।
बार बार यही बार गहो मम हाथ ।।
बहु योनि भ्रमियो नाथ अब लियो शरण ।
अपने गुण से कृपा करो अधम तारण ।।
जगत कारण तुम ही जगत् के जीवन ।
तुम हीं कहो कौन को हूं हे राधा रमण ।।
भुवन मंगल तुम भुवनों के पति ।
तुम यदि त्यागो नाथ तो का होय गति ।।
देख्यो बिचार करि ये जगत मंझारे ।
तुम बिना कोउ नहिं ये दास उद्धारे ।।

सखीवृन्द की विज्ञप्ति

राधाकृष्ण प्राण मोर युगल किशोर ।
जीवन मरण गति और नहिं मोर ।।
कालिन्दी के कूल केलि कदम्ब को बन ।
रत्न वेदी ऊपर बिठाऊँ दोउ जन ।।
श्याम गौरी अंग देऊँ चुवा चन्दन गंध ।
चँवर डुलाऊँ कब हेरूँ मुख चन्द ।।
गूँथि मालती माल देऊँ गल युगल ।
अधर में देहूँ मधुर कपूर ताम्बुल ।।
ललिता विशाखा आदि जेती सखीवृन्द ।
आज्ञा ले करिहौं सेवा चरणारविन्द ।।
श्रीकृष्णचैतन्य चन्द्र दास अनुदास ।
सेवा अभिलाष करे 'नरोत्तम दास' ।।

श्रीगौर-आरति

जय जय गौर चन्द्र आरति की शोभा ।
जान्हवी तट बने जगमन लोभा ॥
दाहिने श्रीनित्यानन्द बायें गदाधर ।
निकट अद्वैत श्रीनिवास छत्रधर ॥
विराजित गौर-चन्द्र रत्न सिंहासन ।
आरति करत ब्रह्मा आदि देव गण ॥
नरहरि आदि प्रिय चमर डुलायें ।
सञ्जय मुकुन्द वासु घोष आदि गायें ॥
शंख बाजे घन्टा बाजे बाजे करताल ।
मधुर मृदंग बाजे परम रसाल ॥
बहु कोटि चन्द्र निन्दे बदन उज्ज्वल ।
गल देशे बनमाला करे झलमल ॥
शिव, शुक, नारद प्रेम से गद् गद् ।
'भक्तिविनोद' देखे गौराङ्ग सम्पद ॥

श्रीयुगल आरति

जय जय राधा कृष्ण युगल मिलन ।
आरति करत ललितादि सखी गण ॥
मदन मोहन रूप त्रिभंग सुन्दर ।
पीताम्बर मोर पंख मुकुट मनोहर ॥
ललित माधव बायें वृषभानु कन्या ।
नील वसना गौरी रूप गुणहिं धन्या ॥
बहु विध अलंकार करे झलमल ।
हरि मन मोहन बदन उज्ज्वल ॥
विशाखादि सखी गण नाना राग गायें ।
प्रिय नर्म सखी सब चमर डुलायें ॥
राधा माधव पद पङ्कज पास ।
'भक्ति विनोद' सखी पद करे आश ॥

श्रीश्रीगौर-गोविन्द आरति

भाले गौर गदाधर आरति निहारी ।
नदिया पूरब दिशि जाऊ बलिहारी ॥
कल्पतरु तरे रत्नसिंहासन-उपरी ।
सखी माझ बिराजत किशोर किशोरी ॥
पुरट जड़ित किते मणि गज मोती ।
झमकि झमकि लगे प्रति अङ्ग ज्योती ॥
नील नीरद सोहे विद्युत माला ।
दुहुं अङ्ग मिलि शोभा भुवन उजाला ॥
शंख बाजे घंटा बाजे बाजे करताल ।
मधुर मृदंग बाजे परम रसाल ॥
विशाखादि सखी वृन्द दुहुंन गुण गावें ।
प्रिय नर्म सखी गण चमर डुलावें ॥
अनंग मञ्जरी चुवा चन्दन देवे ।
मालती की माला रूप मञ्जरी पहरावे ॥
पञ्च प्रदीप जले करपूर बाती ।
ललिता सुन्दरी करे युगल आरती ॥
देवी, लक्ष्मी, श्रुति सब धरणी लोटायें ।
गोपीजन अधिकार सो नहिं पायें ॥
'भक्ति विनोद' रही सुरभि की कुञ्जन ।
आरति दरश सुख करे प्रेम भुञ्जन ॥

श्रीभोग-आरति

भजो भक्त वत्सल श्रीगौर हरी ।
श्रीगौर हरि सोइ गोष्ठ बिहारी,
नन्द यशोमति चित्तहारी ॥
बेला भयो आओ अब प्यारे मन मोहन ।
भोग मन्दिर बैठि करिये भोजन ॥
नन्द के निदेश बैठे गिरिवर धारी ।

बलदेव संग सखा बैठें बारी बारी ॥
शुक्ता शाकादि भाजि नालिता कुष्माण्ड ।
दाल शाक दुग्ध-तुम्बी दधि मोचाखण्ड ॥
मूँग बड़ा उरद बड़ा रोटी घृत भात ।
शष्कुली पिष्टक क्षीर पुरी पायस साथ ॥
कर्पूर अमृत केलि रम्भा क्षीर सार ।
अमृत रसाल अम्ल द्वादश प्रकार ॥
लुचि चिनि माल पुवा लड्डु रसावली ।
भोजन करत कृष्ण होत कुतूहली ॥
राधिका के पक्क अन्न विविध व्यञ्जन ।
परम आनन्द कृष्ण करत भोजन ॥
छल बल से लड्डु खाये श्रीमधु मंगल ।
बगल बजायो अरु बोले हरिबोल ॥
राधिकादि सब देखें भरिया नयन ।
तृप्त होये खायो कृष्ण यशोदा भवन ॥
भोजन करि पियो कृष्ण सुवासित वारी ।
धोय लिये मुख सब जन बारी बारी ॥
हस्त मुख धोय लियो सब सखा गण ।
आनन्द विश्राम करें बलदेव संग ॥
जम्बुल रसाल लायो ताम्बुल मसाला ।
सो आरोगी निद्रा पाये श्रीनन्द गोपाला ॥
विशालाक्ष मोर पंख चमर डुलाये ।
कोमल शय्या पे कृष्ण सुख निद्रा जाये ॥
यशोमति आज्ञा सुन धनिष्ठाने लायो ।
श्रीकृष्ण प्रसाद राधा बहु प्रीति पायो ॥
ललितादि सखीगण अवशेष पायें ।
मन ही मन सुख सों राधा कृष्ण गुण गायें ॥
हरि लीला एक मात्र जिनका प्रमोद ।
भोग आरति गावत सोइ 'भक्ति विनोद' ॥

श्रीराधा—आरति

जय जय राधे जी मैं शरण तुम्हारी ।
ऐसे आरति जाऊँ बलिहारी ॥
पाट पटम्बर ओढ़ नील सारी ।
सीथक सिन्दूर जाऊँ बलिहारी ॥
वेश बनायो प्रिय सहचरी ।
रत्न सिंहासन बैठियो गौरी ॥
चहुं दिश सखि-गण दें करतारी ।
आरती करती ललिता पियारी ॥
रत्न जड़ित मणि माणिक मोती ।
झलमल अभरण प्रति अङ्ग ज्योती ॥
चोदिग सहचरी मंगल गाय ।
प्रिय नर्म सखीगण चमर डुलाय ॥
सोपद पंकज सेवन की आशा ।
दास 'मनोहर' करत भरोसा ॥

—:०:—

श्रीनाम-कीर्त्तन

यशोमती—नन्दन ब्रजवर नागर, गोकुल—रञ्जन कान ।
गोपी-पराण-धन, मदन-मनोहर, कालीय-दमन-विधान ॥
अमल हरिनाम अमिय—विलासा ।
विपिन—पुरन्दर, नवीन—नागरवर, बंशीवदन, सुवासा ॥
ब्रज-जन-पालन, अरिकुल-नाशन नन्द-गोधन-राखोयाला ।
यामुन तट चर, गोपी-वसन हर, रास-रसिक, कृपामय ॥
श्रीराधावल्लभ, वृन्दावन—नटवर, 'भक्तिविनोद' आश्रय ।

—:०:—

सपार्षद–भगवद् विरह जनित–विलाप

प्रेम–धन लायो करि करुणा प्रचुर ।
ऐसे प्रभु कहाँ गये आचार्य ठाकुर ॥
कहाँ मेरे स्वरूप-रूप, कहाँ सनातन ?
कहाँ दास–रघुनाथ पतितपावन ?
कहाँ मेरे भट्टयुग, कहाँ कविराज ?
एक ही संग कहाँ गये गौरा नटराज ?
पाषाण में कूटूँ माथ अनल जरि जाऊँ ?
गौराङ्ग गुणों की निधि कहाँ गये पाऊँ ?
उन सब संगी संग कियो जिन विलास ।
तिन संग न पायो रोवे 'नरोत्तम दास' ॥

श्रीनाम–संकीर्त्तन

जय राधे, जय कृष्ण, जय वृन्दावन ।
श्रीगोविन्द गोपीनाथ मदनमोहन ॥
श्यामकुण्ड राधाकुण्ड गिरी–गोवर्द्धन ।
कालिन्दी यमुना जय जय महाबन ॥
केशीघाट बंशीवट द्वादश–कानन ।
जाहाँ सब लीला किये श्रीनन्दनन्दन ॥
श्रीनन्द–यशोदा जय जय गोपगण ।
श्रीदामादि जय जय धेनुवत्स–गण ॥
जय वृषभानु, जय कीर्त्तिका सुन्दरी ।
जय पौर्णमासी जय आभीर नागरी ॥
जय जय गोपेश्वर वृन्दावन–माझ ।
जय जय कृष्ण सखा बटु द्विजराज ॥
जय रामघाट, जय रोहिणीनन्दन ।
जय जय वृन्दावनवासी सर्व जन ॥
जय द्विजपत्नी जय नागकन्या गण ।
भक्ति सों पायो जिन गोविन्द-चरण ॥

श्रीरास मण्डल जय, जय राधाश्याम ।
जय जय रास लीला सर्व्वमनोरम ॥
जय जयोज्ज्वलरस सर्व्वरस सार ।
परकीया भावे जाहा ब्रजेते प्रचार ॥
श्रीजान्हवापाद पद्म करि के शरण ।
दीन 'कृष्णदास' कहे नाम संकीर्त्तन ॥

—:०:—

श्रीनाम-संकीर्त्तन

(हरि) हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः ।
यादवाय माधवाय केशवाय नमः ॥
गोपाल गोविन्द राम श्रीमधुसूदन ।
गिरिधारी गोपीनाथ मदनमोहन ॥
श्रीचैतन्य-नित्यानन्द श्रीअद्वैत-सीता ।
हरि गुरु वैष्णव भागवत गीता ॥
श्रीरूप सनातन भट्ट-रघुनाथ ।
श्रीजीव गोपालभट्ट दास रघुनाथ ॥
ये छः गोसाइं करूँ चरण वन्दन ।
जासों होवे विघ्न-नाश अभीष्ट-पूरण ॥
ये छः गोसाईं जाके ताको हौं दास ।
ता सबन की चरण रेणु मेरो पञ्चग्रास ॥
तिनके चरण सेवी भक्त संग वास ।
जनम जनम होये एइ अभिलास ॥
ये छः गोसाईं जब किये ब्रजवास ।
राधाकृष्ण नित्यलीला कियो प्रकास ॥
आनन्द भरे बोलो हरि भजो वृन्दावन ।
श्रीगुरु वैष्णव पद राखो निज मन ॥
श्रीगुरु-वैष्णव पाद पद्म करूँ आश ।
नाम-संकीर्त्तन कहे 'नरोत्तम दास' ॥

—:०:—

वन्दना

वृन्दाबन वासी जेते वैष्णवों के गण ।
प्रथम वन्दना करूँ सबके चरण ॥
नीलाचल वासी जेते महाप्रभु गण ।
भूमि मह परि वन्दों सब के चरण ॥
नवद्वीप वासी जेते प्रभु जी के भक्त ।
सबके चरण बन्दों होय अनुरक्त ॥
महाप्रभु भक्त जेते गौड़ देश स्थिति ।
सबके चरण बन्दों करके प्रणति ॥
जो जो देश वासी होवें गौराङ्ग के गण ।
ऊद्ध्र्व बाहु करके बन्दों सबके चरण ॥
भये, आगे होवेंगे जो प्रभु जी के दास ।
सबके चरण बन्दों दाँत लिये घास ॥
ब्रह्माण्ड तारण की शक्ति धरें गौर जन ।
वेद पुराण गुण गायें प्रतिक्षण ॥
महाप्रभु जी के गण पतित पावन ।
सोई लोभ से मैं पापी लीन्ही है शरण ॥
बन्दना करन की मैं कौन शक्ति धरूँ ।
तमोबुद्धि दोष मैं तो दम्भ मात्र करूँ ॥
तब भी गूंगे का भाग्य मन का उल्लास ।
क्षमा कर दोष अधम करो निज दास ॥
सर्व्व वांच्छा सिद्धि होवे यम बन्ध छूटे ।
जगत दुर्लभ सोही प्रेम धन लूटे ॥
मन की बासना पूर्ण अति शीघ्र होवे ।
'देवकी नन्दन दास' लोभ से यों कहे ॥

श्रीगौर नित्यानन्द करुणा

परम करुणा, शरण दोऊ जन, निताई गौरचन्द्र ।
सर्व्व अवतार, सार शिरोमणि, केवल आनन्द कन्द ॥

भजिये भजिये, चैतन्य निताई, सुदृढ़ विश्वास करि ।
छाँड़ि के विषय, सोरस महंपड़ि, रसना कहिये हरि हरि ॥
देखिये चाहे, त्रिभुवन नाहे, ऐसो प्रेममय दाता ।
पशु पत्ती रोवें, पाषाण पिघलें, सुन जिनकी गुण गाथा ॥
संसार में फंस, पड़ा रहा मैं, सो पद नहिं कियो आश ।
अपने करम से, भोगूँ भव दुःख, कहत 'लोचन दास' ॥

—:०:—

प्राण—गौराङ्ग

गौर न होते कैसी होती, काविधि रहतो देह ।
कौन जनातो जग में ब्रज रस, राधाकृष्ण सुनेह ॥
मधुर वृन्दा-विपिन माधुरी, प्रवेश चातुरी सार ।
ब्रज गोपिन को भाव प्रेम रस, को देतो संसार ॥
गौर हरि गुन गावो पुन पुन, सरल भाव धर ध्यान ।
भव सागर में ऐसे दयालु, देखे सुने न आन ॥
गलियों न हृदय गौर नाम ले, काहे धरियो देह ।
वासु को उर पाषाण से गढ़, कठिन बनायो येह ॥

—:०:—

कामोद

सबहुं गावत सबहुं नाचत सबहुं आनन्द मातिया ।
भाव से कम्पित लुठत भूतल धूलि गौराङ्ग कांतिया ॥
मधुर मंगल मृदंग बाजत चलत नव नव भांतिया ।
बचन गद्‌गद् मधुर हासत खसत मोतिन पांतिया ॥
पतित अंक भरि बोलत हरि हरि देवत पुनः प्रेम याचिया ।
अरुण लोचन वरुण झरतहिं तीनों भुवन सींचिया ॥
सो सुख सागर लुब्ध जग जन मुग्ध ह्वै दिन रातिया ।
'दास गोविन्द' रोये अनुत्तण विन्दु कण आध लागिया ॥

—:❋:—

बेलोयार

नाचत नीके गौर वर रतना ।
भक्त कल्पतरु कलिमल मथना ॥
गर-गर भाव तनु पुलकित सघन ।
निज गुण निगूढ़ प्रेम रस मगन ॥
भाव विभोर लोर झर नयना ।
निरविधि हरि हरि बोलत वयना ॥
श्रीपद कुसुम सुकोमल अरुणा ।
लुण्ठत भूमि करत अस करुणा ॥
अज भव आदि सेवित चरण ।
शेखर राखिये अशरण शरण ॥

—:०:—

सुहइ

सहजइ काञ्चन गौर ।
वदन-मनोहर वयस किशोर ॥
ता पे धरियो नटवर वेश ।
प्रति अंग तरंगित भावा वेश ॥
नाचत नवद्वीप चन्द्र ।
जग मन निमगन प्रेमानन्द ॥
विपुल पुलक अवलम्ब ।
विकसित भयो तहाँ भाव कदम्ब ॥
नयनन से पड़ती घन लोर ।
छण हि हंसत रोवत कर शोर ॥
रस भर गद्गद् बोल ।
चरण परस महि आनन्द हिलोर ॥
पूरी सकल जगत जन आशा ।
वंचित भयो क्यों 'गोविन्द दास' ॥

वैष्णव-प्रार्थना

अब तो करुणा करो वैष्णव गुसाईं ।
पतित पावन तुम बिन कोउ नाहीं ॥
पाप नाश होय जासे कौन निकट जाऊँ ।
तुम सों दयाल प्रभु और कहाँ पाऊँ ॥
गङ्गा के परश करे पाछे होय पावन ।
दरश से पवित्र करो ऐसे परम गुन ॥
हरि अपराध से तो तारे हरिनाम ।
तव अपराध से नहीं कहीं कोई ठाम ॥
तुम्हारे हृदय में करें गोविन्द विश्राम् ।
गोविन्द कहें मेरे वैष्णवजन प्राण ॥
प्रति जन्म आशा करूँ पद धूलि धन ।
अबकी बार अपना लीजिये दास 'नरोत्तम' ॥

—:०:※:०:—

श्रीतुलसी आरति

नमो नमः तुलसी महारानी, वृन्दे महारानी नमो नमः ।
नमो रे नमो रे मया नमो नारायणी नमो नमः ॥
जाको दरशे परशे अघ नाशे महिमा वेद पुराण बखानी ।
जाको पत्र मञ्जरी कोमल, राधापति चरण कमल लपटानी ॥
धन्य तुलसी पूरण तप किये, श्रीशालग्राम महा पटरानी ।
धूप दीप नैवेद्य आरति, फूलन किये बरखा बरखानी ॥
छप्पन भोग छत्तीस व्यञ्जन, विना तुलसी प्रभु एक नाहीं मानी ॥
शिव शुक नारद और ब्रह्मादिक, ढूँढत फिरत महामुनि ज्ञानी ।
'चन्द्रशेखर' मैया तेरो यश गावे, भक्ति दान दीजिये महारानी ॥
नमो नमः ० ॥

—:०:※:०:—

प्राचीन-कीर्त्तन

दोहाः—श्रीचैतन्य महाप्रभु, नित्यानन्द गुण धाम ।
संकीर्त्तन के पित्तर दोउ, पुनि पुनि करौं प्रणाम॥

१–जय शचीनन्दन जय गौर हरि, भगत पराण धन नदिया बिहारी ॥

२–जय शचीनन्दन गौर गुणाकर, प्रेम परसमणि भावरससागर

३–निताइ गौराङ्ग जय निताइ गौराङ्ग ।

४–शची के नन्दन सुन्दर गौर, रसिक जनों के मानस चोर ॥
कलियुग पावन कलि भय नाशन, ब्रजरस राधा भाव विभोर ॥

५–जय नदिया नगर बिहारी, श्रीगौराङ्ग श्रीगौराङ्ग ।
कीर्त्तन प्रेम प्रचारी, श्रीगौराङ्ग श्रीगौराङ्ग ॥

६–जय श्रीराधे जय नन्दनन्दन, जय जय गोपी जन मन रञ्जन ॥

७–राधा मोहन कुञ्ज बिहारी, मुरलीधर गोवर्द्धनधारी ॥

८–गोविन्द हरे गोपाल हरे, जय जय प्रभु दीन दयाल हरे ॥

९–श्रीराधे गोपाल भज मन श्रीराधे ।
मोहन गिरधर लाल भजमन श्रीराधे ॥

१०–राधेश्याम मनोहर जोड़ी नन्द नन्दन वृषभानु किशोरी ॥

११–जय गोविन्द जय गोपाल केशव माधव दीन दयाल ॥

१२–राधे गोविन्द जय राधे गोविन्द, श्याम सुन्दर मदन मोहन वृन्दाबन चन्द्र ॥

१३–पतित पावन मधुर नाम । जय राधे जय राधेश्याम ॥

१४–मोहन माधव श्याम मुरारी । गोविन्दम् गोपाल हरे ॥
नटबर सोहन गिरबर धारी । केशव दीन दयाल हरे ॥

१५–राधा गोपी प्राण धन । वृन्दाबन बिहारी लाल ॥

१६–महाप्रभो तुम परम उदार ।
अद्भुत रीति तुम्हारी देखी, पतितन के तुम अतिरिझवार ॥
येही आशा लाग रही है, और नहीं मेरो आधार ।
जगन्नाथ सुत पद रज बन्दों, दीजे प्रेम भक्ति सुख सार ॥

श्री चैतन्यदेव ने दस सिद्धान्त जगत् में प्रकट किये हैं।

ये ही उनकी शिक्षा के मूल सूत्र हैं :-

१–'शब्द' या वेद-वाक्य ही प्रधान प्रमाण हैं। श्रीमद्भागवत उस वेदकल्पतरु का परिपक्व फल है तथा ब्रह्मसूत्रों का अकृतिम भाष्य है। वेद-बीज प्रणव ही महावाक्य है।

२–श्रीकृष्ण ही अद्वितीय परम तत्व हैं।

३–वे सर्व शक्तिमान् हैं– स्वरूप शक्ति, जीव शक्ति और माया शक्ति के आश्रय हैं।

४–वे समस्त रसामृत के समुद्र हैं।

५–सारे जीव 'जीव–शक्ति' से युक्त परमात्मा के अणु-चिदंश (विभिन्नांश) नित्य, अनेक और अनन्त हैं। नित्य बद्ध या अनादि बहिर्मुख तथा नित्यमुक्त या अनादि–उन्मुख भेद से जीव दो प्रकार के हैं।

६–बहिर्मुखता–छिद्र–दोष के कारण जीव माया–शक्ति के द्वारा ग्रसित और आवृत-ज्ञान है।

७–परतत्त्व के प्रति ज्ञानाभावरूपी विमुखता अनादि होने पर भी वह विनाशी है।

८–श्रीकृष्ण की स्वरूप शक्ति, तटस्था–शक्ति और माया-शक्ति तथा तत्तत्शक्ति–परिणत तत्वसमूह श्रीकृष्ण की अचिन्त्यशक्ति के कारण श्रीकृष्ण से एक साथ ही भेद और अभेद–युक्त हैं (अचिन्त्यभेदाभेद)

९–वैमुख्य--विरोधिनी साक्षात्- भगवत्साम्मुख्य श्रेष्ठा भक्ति ही प्रधान अभिधेय या साधन है।

१०–परतत्त्व का अनुभव, विमुक्ति या विज्ञानरूप श्रीकृष्ण प्रेम ही (श्रीकृष्ण-साक्षात्कार ही) जीव का सर्वश्रेष्ठ प्रयोजन या साध्य है।

जगद्-गुरु श्रीश्रील प्रभुपाद की उपदेशावली

१—परम ब्रह्म श्रीकृष्ण चन्द्र ही एक मात्र भोक्ता और नित्यप्रभु हैं, उनके अतिरिक्त सभी उनके भोग्य हैं।

२—जो जीव श्रीहरि भजन नहीं करते वे सभी अनजान और आत्म घाती हैं।

३—हम जगत् में अधिक दिन न रहेंगे, हरि कीर्त्तन करते करते हमारा देहपात होने से ही इस देह धारण की सार्थकता है।

४—हम इस जगत में कोई काठ, पत्थर के कारीगर होने नहीं आये हैं, हम तो श्रीचैतन्य देव की वाणी के वाहक(बोझा ढोने वाले) मात्र हैं।

५—हम सत्कर्मी, कुकर्मी अथवा ज्ञानी, अज्ञानी नहीं हैं, हम तो निर्मल हरि भक्तों के पाद त्राण वाहक "कीर्त्तनीयः सदाहरिः" मंत्र में दीक्षित हैं।

६—यदि हम श्रेय पथ चाहते हैं तो असंख्य जन मत का परित्याग करके भी श्रौत वाणी का ही श्रवण करें।

७—श्रीचैतन्य देव के मनोऽभीष्ट संस्थापक श्रीरूपगोस्वामी के चरण कमलों की धूलि हमारे जीवन की एकमात्र अभिलाषा की वस्तु है।

८—सरलता का ही दूसरा नाम वैष्णवता है, परमहंस वैष्णवों के दास सरल होते हैं, इसलिये वे ही सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण हैं।

९—महामाया के कारागार से यदि एक जीव की भी रक्षा कर सकें तो करोड़ करोड़ अस्पतालों के निर्माण की अपेक्षा अधिक गुण परोपकार का कार्य होगा।

१०—पशु, पक्षी कीट, पतंग आदि लाखों योनियों में रहना अच्छा है, परन्तु कपटता का आश्रय करना ठीक नहीं है। निष्कपट व्यक्ति का ही कल्याण होता है।